फरवरी २०१८

कीमत ₹ २०

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

भेद मत डालना

अक्रम एक्सप्रेस

भेद मत डालना

संपादकीय

बालमित्रों,

जब हम छोटे थे तब यदि दोस्त के साथ झगड़ा हो जाता तो हम उसकी कट्टी हो जाते थे, आज बड़े होने पर भी यह आदत गई तो नहीं है। आज भी हम छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा कर बैठते हैं। यदि झगड़ा नहीं भी करें फिर भी कोई हमारी बात नहीं माने, हमारी बात के साथ सहमत नहीं हो तो हम तुरंत उसके बारे में उल्टा बोलने लगते हैं। इतना भी नहीं सोचते कि उसे दुःख हो जाएगा। दुःख तो क्या, सामने वाले के साथ हमारा भेद ही पड़ जाता है।

एक बार भेद पड़ जाने के बाद उसे खत्म करना बहुत मुश्किल है। इसलिए ज्ञानी कभी भी किसी के साथ भेद न करने की सीख देते हैं। लेकिन यह कैसे सँभव है?

तो आइए इस अंक में हम इससे संबंधित चाबियाँ प्राप्त करेंगे और किसी के साथ भेद न पड़े, उस तरह से जीना सीखेंगे।

-डिम्पल मेहता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंक: ११
अखंड क्रमांक: ५९
फरवरी २०१८

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१,
गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : जब हम किसी के दोष देखते हैं, किसी की गलती निकालते हैं, किसी को उल्टा बोलते हैं, किसी को दुःख पहुँचाते हैं, तो सामने वाले को हमारे साथ भेद पड़ जाता है। यदि ऐसा ही कोई हमारे साथ करे, तो हमारा भी उसके साथ भेद पड़ जाएगा। लेकिन अभी तो हम अपना ही देखेंगे। हमें ठीक से कहना नहीं आता इसलिए भेद पड़ जाता है। सामने वाले को दुःख हो जाए ऐसा बोल दिया या वर्तन कर दिया है तो तुरंत ही सामने वाले को हमारे साथ भेद पड़ जाता है।

कोई हमारा ज़रा सा भी अपमान कर दे या हमसे उल्टा बोल दे या फिर हमारी बात के साथ सहमत नहीं हो तो हमारा मुँह बिगड़ जाता है और हमारे अंदर भेद पड़ जाता है कि मेरा नहीं मानता, खुद की ही चलाता है। और तब तक हम भी उल्टे चलने लगते हैं।

ऐसा कुछ हो तो हमें चैन नहीं पड़ना चाहिए। क्योंकि ऐसा होने से सामने वाले का मन हमारे साथ अलग पड़ जाता है। अतः उसे पलट देना चाहिए, एक कर देना चाहिए। पलट देना अर्थात् सामने वाले के साथ प्रेम से समझ के व्यवहार करना चाहिए और अंदर से प्रतिक्रमण करने चाहिए। किसी भी तरह आवेश में नहीं आना चाहिए।

जब तक हमें किसी के साथ भेद लगता है तब तक हमें उसके साथ अभेदता नहीं आएगी। इसका क्या उपाय है? जब हम पहले भेद तोड़ेंगे तब सामने वाला भी भेद तोड़ेगा। लेकिन यदि हमारा भेद चालू रहे, और हम कहें कि सामने वाला भेद रखता है, भेद रखता है। अरे, सामने वाले के भेद को तो देखना ही नहीं है। तुम भेद रखते हो उसे देखो न। भेद रखने से आपके ज्ञान पर आवरण आएँगे। सामने वाले के साथ हमें ज़रा भी जुदाई नहीं पड़नी चाहिए। भेद नहीं पड़ना चाहिए।

एक-दूसरे के विचार अलग हों ऐसा तो हो सकता है। लेकिन इसकी वजह से भेद नहीं पड़ना चाहिए। यदि साधारण सी हमारी बात में और सामने वाले की बात के व्यूपोइन्ट में फर्क पड़ता है, फिर भी हमें एडजस्ट तो होना ही पड़ेगा न। हमें तैयारी रखनी है कि मुझे एडजस्ट होना ही है।

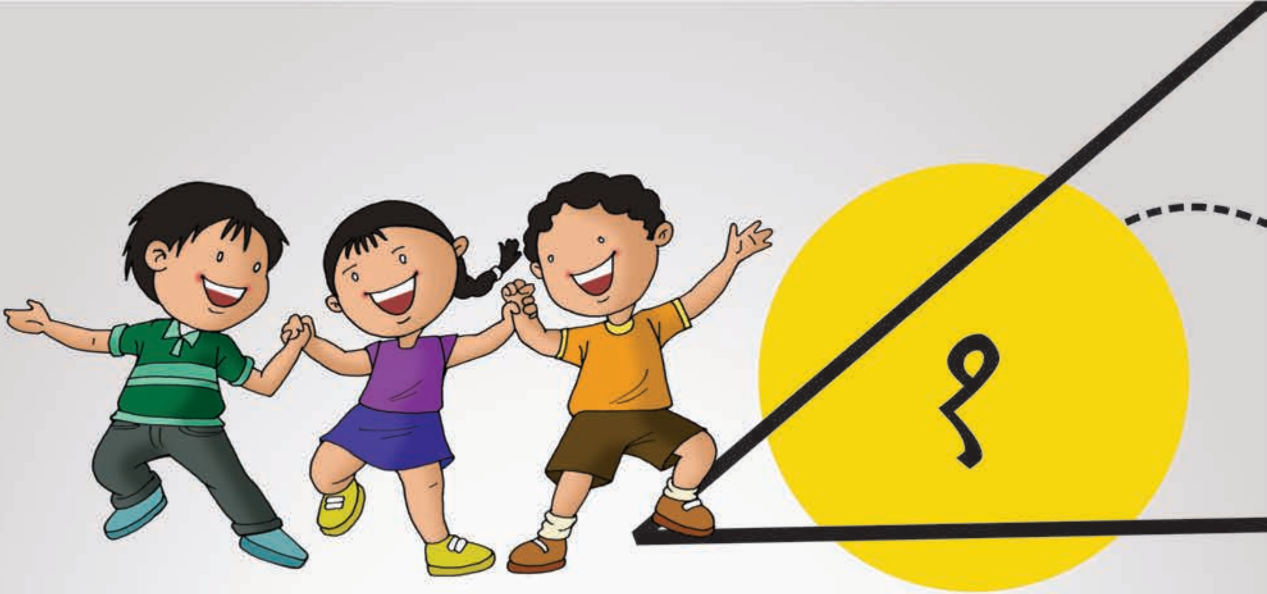

मतभेद अर्थात् दो व्यक्ति के व्यूपॉन्ट्स अलग हैं। इसलिए झगड़े होते हैं।

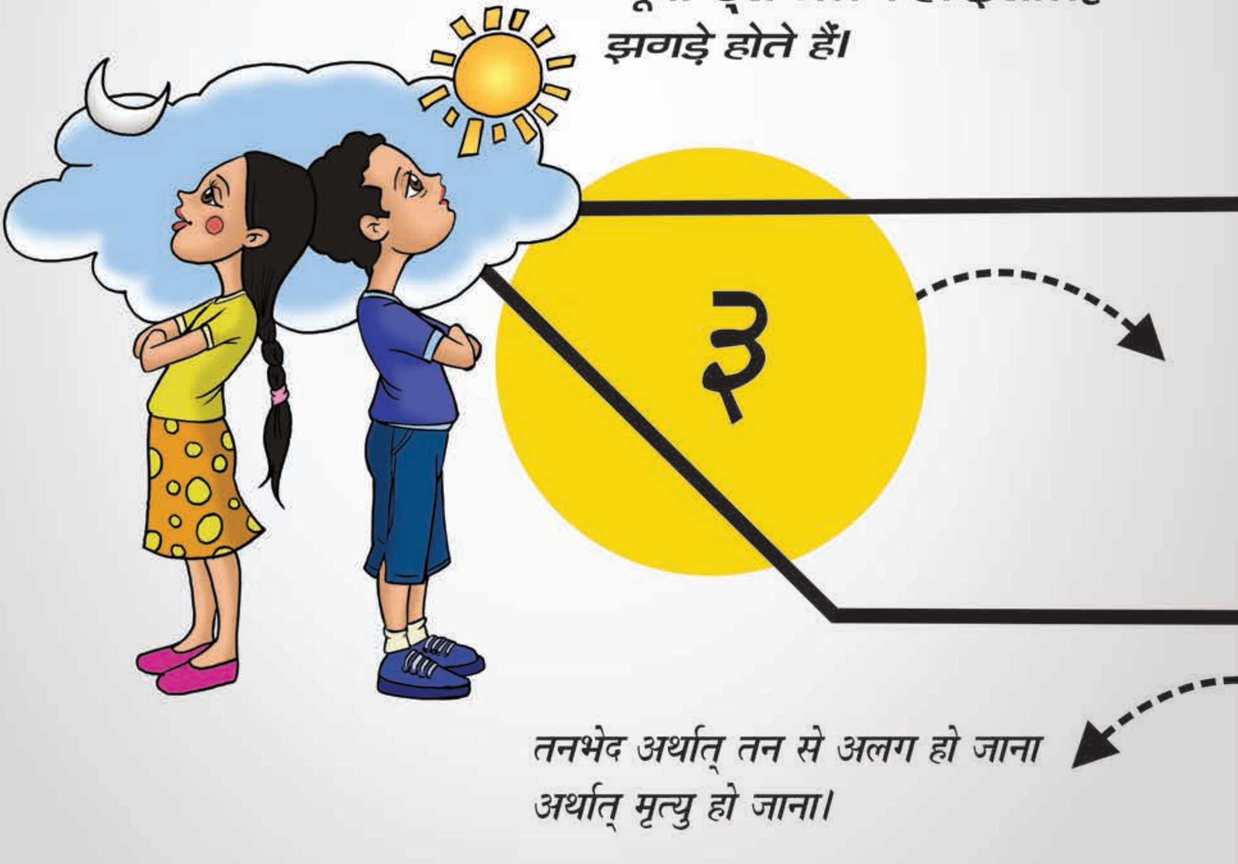

तनभेद अर्थात् तन से अलग हो जाना अर्थात् मृत्यु हो जाना।

यह तो नई ही बात!

फ्रेन्ड्स में मतभेद पड़ जाएँ, वह कैसे चलेगा? वैसे तो कहते हैं कि हम सब एक हैं फिर मतभेद क्यों?

२

मनभेद अर्थात् दो व्यक्ति के मन एक नहीं होते। यानी दोनों के विचारों में इतना फर्क है कि किसी भी तरह वे फ्रेन्ड की तरह साथ में नहीं रह सकते और फ्रेन्डशीप टूट जाती है।

४

देवदूत

एक छोटा सा सुंदर गाँव था। उसका नाम आदर्श नगर था। आदर्श नगर की सुंदरता का वर्णन करने में कवि भी नहीं थकते।

गाँव की सीमा पर एक भव्य मंदिर था। मंदिर के पास एक सुंदर सा तालाब था। रोज़ शाम को मंदिर में आरती-भक्ति करके, गाँव के लोग तालाब के किनारे बैठकर पूरे दिन की थकान उतारते।

आदर्श नगर में साधु-संतों का तहे दिल से सत्कार किया जाता था। साधु-संतों के समागम से गाँव के बच्चों और युवकों में सुंदर संस्कार-सिंचन होता था। जो भी आदर्श नगर आता उसे वहीं बस जाने का मन हो जाता। ऐसे खिंचाव का कारण यह भी था कि आदर्श नगर के निवासी बहुत ही प्रेम भाव वाले थे। गाँव वालों की एकता आसपास के गाँव के लिए उदाहरण रूप थी।

जन्माष्टी का त्यौहार नज़दीक आ रहा था। हर साल की तरह इस साल भी मोहन, किशन और शंकर की त्रिपुटी त्यौहार मनाने की तैयारी में लग गई थी। उत्सव में त्रिपुटी का कुछ नया प्रदर्शन देखने के लिए गाँव वालों में उत्सुकता

रहती थी।

रोज़ की तरह उस दिन भी त्रिपुटी ने मंदिर के पीछे वाली छोटी कुटिया में मिलकर काम करने का तय किया। दोपहर के दो बजे किशन और शंकर तो आ गए लेकिन मोहन का कोई अतापता नहीं था।

सुबह से ही मोहन घर के कामों को खत्म करने में लगा था। लेकिन जैसे संयोग उससे रूठ गए थे। वह जो भी काम खत्म करने जाता, तभी गड़बड़ हो जाती। धूप बहुत तेज थी। गरमी में थककर मोहन का दिमाग भी गरम हो गया था। पसीने से लथपथ, जब वह कुटिया में पहुँचा तब किशन और शंकर ने काम शुरू कर दिया था। पिछले दिन मोहन की बनाई हुई आकृति पर किशन काम कर रहा था।

किशन का काम देखकर मोहन की कमान छिटक गई, "किशनिया, यह क्या किया तूने? सब बेकार कर दिया? मेरी पूरी मेहनत पर पानी फेर दिया। मेरे काम को छूने के लिए तुझसे किसने कहा?"

मोहन के ऐसे कठोर शब्द सुनकर किशन का दिल टूट गया। ब्रश पास में रखकर, कुछ भी बोले बिना उठकर जाने लगा।

"अरे रुक जा किशन। मोहन का यह मतलब नहीं था कि..." शंकर ने किशन को रोकने की कोशिश की।

"हाँ, हाँ... मुझे पता है कि उसका क्या मतलब था। और यह भी पता है कि तू उसका पक्ष क्यों ले रहा है।" किशन कुटिया का दरवाज़ा पछाड़ते हुए बाहर चला गया।

"मोहन रोक उसे। यह क्या किया तूने?" शंकर परिस्थिति को सँभालने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन मोहन के दिमाग का पारा चढ़ा हुआ था,

"तुझे जाना हो तो तू भी जा। मुझे किसी का काम नहीं है। मैं अकेले ही सब सँभाल लूँगा।"

और बस, उन तीनों के संबंध में एक बड़ी दरार पड़ गई। जन्माष्टमी का उत्सव आकर चला गया। लेकिन उत्सव में पहले जैसा उत्साह नहीं था। गाँव वालों ने तीनों का फीका व्यवहार देखा।

दिनोंदिन दरार कम होने के बजाय बढ़ती जा रही थी। उनके संबंध में कड़वाहट इतनी हद तक बढ़ गई कि वे एक-दूसरे का नाम भी सुनना पसंद नहीं करते थे। कड़वाहट सिर्फ उन तीनों तक ही सीमित नहीं रही लेकिन परिवारों में भी फैल गई।

और धीरे-धीरे उस कड़वाहट के स्पंदन गाँव वालों तक भी पहुँच गए। एक के पक्ष में आएँ तो दूसरे का दोष देखने में देर कितनी? गाँव वालों के साथ भी ऐसा ही हुआ। किसी ने मोहन का पक्ष लिया तो किसी ने किशन का। युवकों के झगड़े में माता-पिता ने अपने मतों का ज़हर डाला और छोटी सी बात का बतंगड़ बन गया। एक समय का छोटा सा अटूट आदर्श नगर मतभेदों के टुकड़ों में बंट गया। जो गाँववासी एक परिवार की तरह मिलजुलकर सुख-दुःख के समय एक-दूसरे के साथ खड़े रहते थे, वे एक-दूसरे के लिए पराए बन गए।

गाँव के मुखिया जी विचारशील और विचक्षण थे, लेकिन इन मतभेदों को टालने का कोई भी उपाय उनके पास नहीं था। संत रामदास के साथ मुखिया जी की पुरानी पहचान थी। संत के पास जाकर मुखिया जी ने अपनी समस्या बताई।

संत रामदास ने सारी बातें ध्यान से सुनी। थोड़ी देर के लिए आँख बंद करके बैठे। और फिर बोलें, "गाँव वासियों को मेरा एक संदेश देना। मुझे एक संकेत मिला है। आपके गाँव में एक व्यक्ति ऐसा है जो देवों को भी प्रिय है। उसे देवदूत भी कह सकते हैं। वे कई जन्मों से लोक कल्याण के निमित्त है। देवगति में से आए हैं और फिर से देवगति में ही जन्म लेने वाले हैं।"

मुखिया जी ने पूछा, "वह व्यक्ति कौन है?"

संत रामदास ने कहा, "बस, इतना ही संकेत प्राप्त हुआ है।"

रामदास के इस महत्वपूर्ण संदेश को गाँव वासियों तक पहुँचाने के लिए मुखिया जी ने उसी शाम मंदिर के प्रांगण में सभा का आयोजन करवाया। गाँव वासियों को रामदास के प्रति बहुत आदर था और इसीलिए संदेश सुनने के लिए सभी हाज़िर हो गए।

मुखिया जी ने रामदास जी के शब्दों को ही सभा में दौराया। सभा में एक सन्नाटा सा छा गया। सभा में बैठा हुआ हर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को देखकर सोचने लगा, "यह देवदूत हुआ तो?"

नवनीत भाई की दृष्टि मनोहर भाई पर पड़ी। उन्होंने मन में सोचा, "तकलीफ के समय मनोहर भाई ने मेरी कितनी मदद की थी। हर पल मेरे साथ खड़े रहे थे। और बस, एक बार उन्होंने किशन की प्रसंशा क्या कर दी, मैंने उनके साथ संबंध ही काट दिया? किशन और मोहन के झगड़े को इतना बड़ा स्वरूप दे दिया?" मनोहर के गुण क्या देवदूत से कम हैं? एक देवदूत के साथ ऐसा व्यवहार करने का क्या फल मिलेगा?

बीमारी के समय जशु चाची की सेवा रमीला चाची को याद आई, तो सोमा भाई को मनु भाई के हँसी-मज़ाक और उनके साथ बिताई हुई हल्की पलें याद आई।

सभी के मन में एक ही बात गूँजने लगी। "छोटी सी बात के लिए इतना सोच लिया? सारे अच्छे गुण

भूला दिए? कितनी बड़ी भूल हो गई। यदि वे देवदूत हुए तो?"

तभी मोहन ने खड़े होकर किशन के पैर छूए, "मुझे माफ कर दे, दोस्त। मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई।"

"अरे, होती होगी?" कहकर किशन ने मोहन को खड़ा किया और उससे गले लगा। किशन और मोहन, शंकर के पास गए और तीनों एक-दूसरे के साथ गले लगे।

मोहन ने पहल की और पूरे गाँव ने उसका अनुकरण किया। उस दिन आदर्श नगर में जैसे माफी महोत्सव का आयोजन हो गया। सभी ने दिल से एक-दूसरे से माफी माँगी।

उस दिन के बाद यदि किसी को एक-दूसरे के प्रति उल्टा विचार आए तो तुरंत ही उस उल्टे विचार को उस व्यक्ति के अच्छे गुण को याद करके धो डालते। उस व्यक्ति के साथ भेद नहीं पड़ने देते। सभी एक-दूसरे के अंदर देवदूत के दर्शन करते।

देवदूत की सही पहचान तो किसी को नहीं हुई, लेकिन एक बार फिर परस्पर प्रेम से आदर्श नगर में स्वर्ग जैसा सुख छा गया।

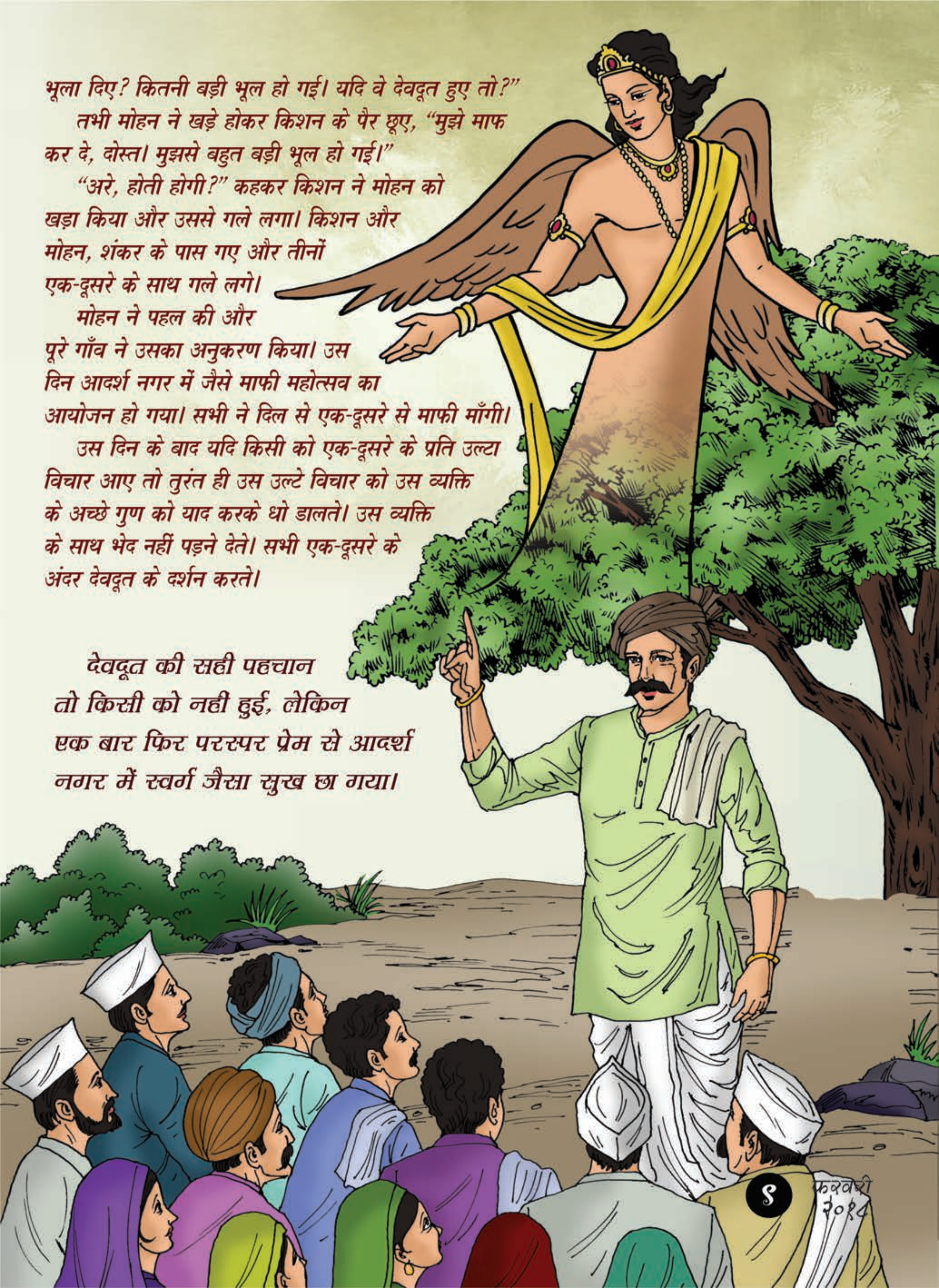

अंबा स्कूल और ज्ञानमंदिर द्वारा आयोजित
A to Z Positivity द्वारा एन्यूअल डे का सेलीब्रेशन किया...

Welcome

Live Performance

Dance

Food Mela

Selfie Zone

पूज्यश्री द्वारा ज्ञानी पुरुष भाग-१ का विमोचन और कल्चरल प्रोग्राम...

संधान

माँ, क्या कर रही हो?
बेटा, यह कपड़ा फट गया है उसे सील रही हूँ।
गोपाल ने माँ की गोद में सिर रख दिया।
क्या हुआ मेरे बेटे को? क्या फिर से भार्गव के साथ झगड़ा हो गया?
माँ, बड़े भाई मेरी एक भी बात नहीं सुनते। वे समझते क्या हैं? अब मैं भी उनसे बात नहीं करूँगा।
बेटा, यदि एक फाड़े तो दूसरे को जोड़ना चाहिए। तेरा बड़ा भाई पूरी रात फाड़ता रहे तो तुझे पूरी रात जोड़ते रहना है। तभी संबंध टीकते हैं।
जोड़ना? किस तरह?

देख, वह पूरी रात ऐसा सोचे कि, "गोपाल बहुत बुरा कर रहा है", तो तुझे पूरी रात ऐसा सोचना है कि, "बड़े भाई बहुत अच्छे हैं। मेरी ही गलती हो रही है।" तो सुबह जुड़ जाएगा। तुझे समझ में आया न?
हाँ, माँ।
और यदि वह फाड़े और तुम भी फाड़ो तो अलग हो जाओगे। भेद पड़ जाएगा।
तभी बरसात की बूँदें गोपाल के चेहरे पर पड़ी, और वह भूतकाल की यादों से वर्तमान में आ गया। बड़े भाई के खेत की ओर नज़र करके उसने एक गहरी साँस ली।
छः महीने हो गए। बड़े भाई ने मेरी ओर देखा भी नहीं तो मैं क्यों देखूँ? इतना बड़ा निर्णय मुझ से पूछे बिना ले लिया और मैं कुछ कहने गया तो...
फिर बड़े भाई के शब्द गोपाल के कानों में गूँजने लगे...
आज से हमारा कुछ भी साथ में नहीं है। नहर के उस ओर तुम्हारा खेत और नहर के इस ओर मेरा खेत। मुझे तुम्हारा मुँह भी नहीं देखना।

गोपाल की आँखों में आँसू आ गए। बारीश तेज़ हो गई थी। मुँह पोछकर वह घर की ओर जाने लगा।
दूसरे दिन गोपाल के खेत के पास भार्गव ने लकड़ी और मकान बनाने का सामान देखा।
गोपाल क्या करने वाला है? उस दिन मैंने उससे कहा था कि मुझे उसका मुँह भी नहीं देखना। शायद इसलिए वह बाड़ बना रहा होगा।
यदि वह बाड़ बाँधेगा तो मैं उससे ऊँची बाड़ बाँधूँगा।
और उसी दिन भार्गव बाड़ बाँधने का सामान लेने के लिए शहर गया।
ऐसी बाड़ बाँधूँगा कि उसकी बाड़ की कोई कीमत ही नहीं रहेगी।
तीन दिन बाद भार्गव शहर से बाढ़ बाँधने का सामान लेकर वापस लौटा। खेत की ओर देखा तो उसके आश्चर्य का पार नहीं था। गोपाल ने बाड़ नहीं लेकिन नहर पर दोनों खेतों को जोड़ने वाला एक छोटा सा पुल बनाया था।

छोटे भाई का इतना उमदा काम देखकर भार्गव की आँखों से आँसू बहने लगे। अपने विचारों पर उसे शर्म आने लगी। सामान छोड़कर वह छोटे भाई की ओर दौड़ा।
गोपाल ने दूर से बड़े भाई को आता देखा और वह भी उनकी ओर गया।
दोनों भाई पुल के बीचोंबीच मिलें।
गोपाल मैंने तुम्हारे साथ इतना बुरा किया, फिर भी तूने भेद नहीं पड़ने दिया। मुझे माफकर दे, भाई।
मुझे ऐसा लगा कि तुम बाड़ बाँधने वाले हो। लेकिन तुमने यह पुल बाँधकर फिर से अपने दिलों को जोड़ दिया है।
गोपाल बड़े भाई के साथ लिपट गया। आँखें बंद करके उसने मन ही मन माँ को धन्यवाद दिया।

प्राचीनकाल में काशी राज्य पर राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। उनके सौ पुत्र थे। उनमें सब से छोटा बेटा संवर था। राजा ने संवर को छोड़कर अन्य पुत्रों को गुरु के पास विद्याभ्यास के लिए भेज दिया। संवर को बोधिसत्व के पास भेजा।

बोधिसत्व बहुत विद्यावान थे। उनके पास कई साल तक अभ्यास करके संवर प्रवीण हो गया। कई सालों के बाद राजकुमारों के गुरु अपने शिष्यों को राजा के पास लेकर आए। उन्होंने कहा, "महाराज, आपके पुत्र समस्त विद्याओं में पारंगत हो चुके हैं।"

राजा प्रसन्न हो गए। उन्होंने गुरु का अपूर्व सम्मान किया और योग्य गुरु दक्षिणा दी। पुत्रों को विभिन्न प्रान्तों का शासक नियुक्त कर दिया और राजधानी से बाहर भेज दिया। यह बात संवर को पता चली। उसने बोधिसत्व से पूछा, "गुरुदेव, यदि मेरे पिता अन्य भाइयों की तरह मुझसे भी राज्य के किसी प्रान्त का शासक बनने के लिए कहें, तो मुझे क्या करना चाहिए?"

बोधिसत्व ने क्षणभर सोचकर कहा, "वत्स, यदि तुम्हारे पिता तुमसे किसी प्रान्त का शासक बनने के लिए कहें तो उसका अस्वीकार कर देना। तुम पिता के पास रहकर श्रद्धा-भक्ति से उनकी सेवा करना। यह तुम्हारा परम कर्तव्य है।" संवर ने गुरु की आज्ञा स्वीकार की।

एक दिन राजा ब्रह्मदत्त बोधिसत्व के आश्रम में आए। संवर अपने पिता को प्रणाम करके गुरु के पास बैठ गया। राजा ने उससे पूछा, "बेटा, तुम्हारा शिक्षण खत्म हो गया न?"

संवर ने जवाब दिया, "पिता जी, गुरुदेव की कृपा से मैंने सारी विद्याएँ सीख ली हैं।"

राजा ने कहा, "तो फिर तुम शासन करने के लिए इस राज्य का कोई प्रान्त पसंद कर लो।"

संवर ने जवाब दिया, "पिता जी, मैं आपका सब से छोटा बेटा हूँ। यदि मैं राज्य छोड़कर बाहर जाऊँगा तो आपके पास कौन रहेगा? आपकी देखभाल कौन करेगा? मुझे किसी अधिकार की ज़रूरत नहीं है। आपका पुत्र यहाँ रहे वही योग्य है। मैं आपकी सेवा में ही अपना जीवन बिताना चाहता हूँ।"

यह सुनकर राजा बहुत खुश हो गए। उस दिन से संवर पिता के साथ रहने लगा। ज़रूरत पड़ने पर वह बोधसत्व की सलाह ले लेता था।

एक बार संवर ने बोधिसत्व की सलाह लेकर थोड़ी सी खाली ज़मीन को समतल करवाया। उसमें फल-फूल के पेड़ लगवाए और वहाँ एक सुंदर बगीचा बना दिया। वह बगीचा नगरवासियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया। राज्य के उद्योगपति भी शाम को उस बगीचे में घूमने आते थे। उनके साथ संवर का परिचय हुआ। नगर के लोग संवर की प्रशंसा करने लगे।

एक दिन संवर ने पिता की सहमति लेकर नगर के सभी लोगों को भोजन करवाया। फिर राज्य के अधिकारी, घोड़ेसवार, पैदल सेना को भोजन करवाया। विदेश से आने वाले राजदूत और व्यापारियों की सुविधा के लिए विशाल अतिथिगृह बनवाए। इससे संवर का यश पूरे राज्य में फैल गया।

इस तरह कई साल बीत गए। राजा वृद्ध हो गए थे। अब उनका अंतिम समय भी आ गया था। इसलिए उन्होंने मंत्रियों को बुलाकर कहा, "मेरे मृत्यु के बाद मेरे सभी पुत्रों को राजगद्दी पर बैठने का हक है। इसलिए आप लोग बहुत सोचकर सब से योग्य राजकुमार को राजगद्दी पर बिठाना।"

ऐसा कहकर राजा की मृत्यु हो गई। राजा की मृत्यु के बाद सभी मंत्रियों ने चर्चा-विचारणा करके निर्णय लिया कि संवर ही योग्य राजकुमार है। फिर धूम-धाम से उसका राज्याभिषेक कर दिया गया। प्रजा में खुशियाँ फैल गई। उस दिन से संवर अपने गुरु बोधिसत्व की सलाह से न्यायपूर्वक राज्य करने लगा।

संवर का राजा बनना बाकी के निन्यानवे राजकुमारों को अच्छा नहीं लगा। वे उसकी निंदा करने लगे। उन्होंने मिलकर एक दूत के माध्यम से समाचार भेजे कि, वह राज्य छोड़ दे वर्ना परिणाम अच्छा नहीं आएगा। फिर उन्होंने अपनी-अपनी सेना के साथ किले को घेर लिया।

संवर ने यह समाचार अपने गुरु को दिए। उन्होंने उसे समझाया, "अपने भाइयों के साथ दुश्मनी करना महापाप है। इसलिए पिता के राज्य को बराबर भागों में बाँटकर अपने भाइयों का प्रेम प्राप्त करो।" संवर को गुरु की आज्ञा योग्य लगी। भाइयों को तो आश्चर्य हुआ। संवर का बड़ा भाई उपासत को बहुत आश्चर्य हुआ।

उसने अपने छोटे भाइयों से कहा, "हमने ऐसा सोचा था कि संवर राजा बनकर हम सब का दुश्मन बन गया होगा। इसलिए हम उस पर हमला करने आए थे। लेकिन उसने हमारे साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करके सभी का प्रेम संपादन किया है। ऐसे भाई पर हमला कैसा?"

एक भाई ने पूछा, "तो अब हमारा क्या फर्ज़ है?"

उपासत ने समझाया, "हम छोटे भाई के साथ संधि कर लें यही उत्तम मार्ग है। यह सही बात है कि हम सब पिता जी के सिंहासन के अधिकारी हैं, लेकिन हम सब एक साथ तो राजा नहीं बन सकते। इसलिए हमें जो भाग प्राप्त हुआ है, उसे उसको सौंप देते हैं।"

सभी ने सम्मति दे दी। वे संवर की जय जयकार करते हुए सेना सहित नगर पहुँचे। बड़े भाई ने अपने सभी छोटे भाइयों की तरफ से संवर को आशीर्वाद दिया।

इस तरह संवर ने अपने भाइयों का प्रेम संपादन करके सभी का आदर सम्मान प्राप्त करते हुए अनेक वर्षों तक राज्य किया। वे एक महान राजा के रूप में प्रसिद्ध हुए।

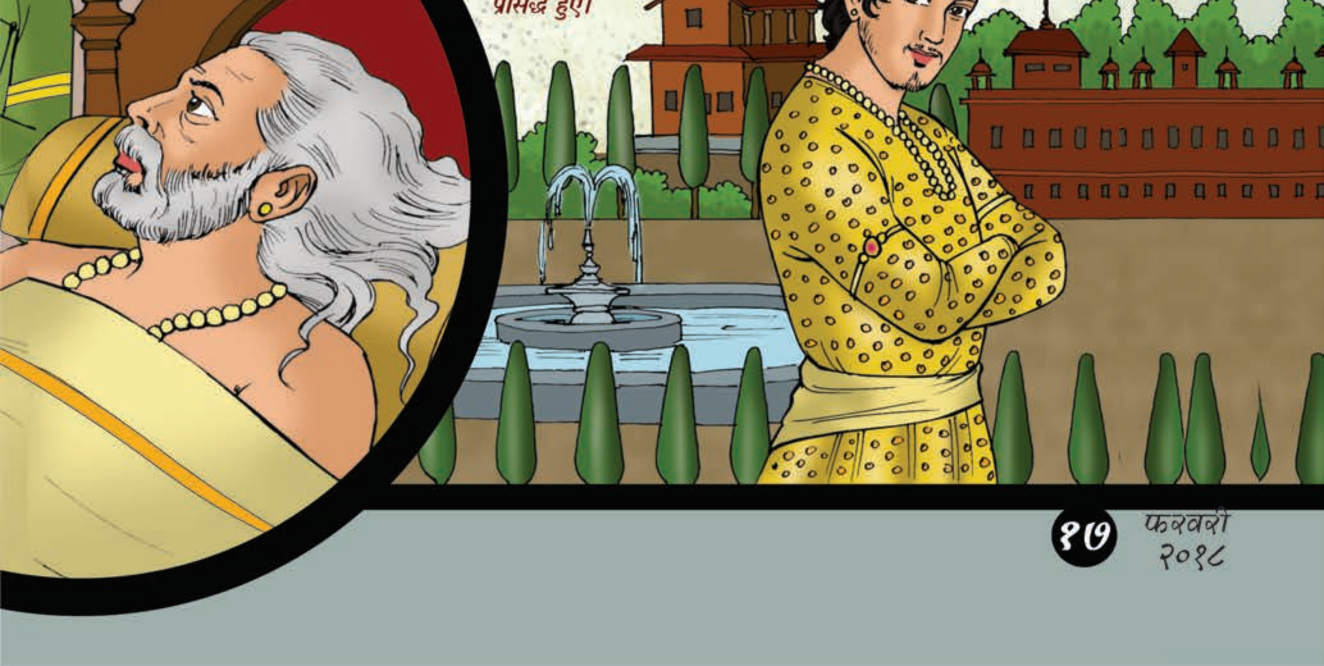

जीवंत उदाहरण

अमरीका के महान प्रेसिडेन्ट अब्राहम लिंकन की युवावस्था के दिनों की बात है।

१८३१ में अब्राहम लिंकन इलीनोई राज्य के न्यू सालेम शहर में रहते थे। वहाँ उन्होंने डेन्टन ओफ्फूट की दुकान में एक क्लर्क की नौकरी स्वीकार कर ली थी। ओफ्फूट को लिंकन पसंद आ गए। लिंकन जितने बुद्धिशाली थे उतने ही बलवान भी थे।

ओफ्फूट अपनी दुकान में आने वाले लोगों से कहते, "यह मेरा छः फुट चार इंच का क्लर्क, किसी से हार जाए ऐसा नहीं है। काबिल इतना है कि उसके काम में कोई भूल ही नहीं होती और ताकतवर इतना है कि कोई उसे हाथ नहीं लगा सकता।"

उस इलाके में एक ऊधमी युवकों की टोली से बहुत परेशानी थी। वे राहगीरों की मज़ाक बनाते, दुकानदारों को परेशान करते और लोगों को छेड़ते रहते थे। उस टोली का सरदार जेक आर्मस्ट्रोंग था। उसने अब्राहम के बारे में बड़ी-बड़ी बातें सुनी।

आर्मस्ट्रोंग को मन में लगा, "मेरे इलाके में और कौन बलवान आ गया, पूरे इलाके में मेरा प्रतिस्पर्धी कोई नहीं है।"

उसने अपने ऊधमी साथियों को भड़काया और कहा, "आज तो लिंकन को सबक सिखाते हैं।"

टोली डेन्टन ओफ्फूट की दुकान पर आ गई। कॉलर ऊँचा करके, आर्मस्ट्रोंग ने ओफ्फूट से कहा, "तेरे क्लर्क को घर भेजने का समय आ गया है। तू सब के सामने बड़ी-बड़ी बातें करता है कि तेरा यह क्लर्क अच्छे-अच्छों को कुस्ती में हरा सकता है, तो आज मैं उसको हरा कर दिखाता हूँ। मुझे आज तक कुस्ती की जंग में कोई नहीं हरा पाया है। तेरे इस लिंकन की कैसी बुरी दशा होती है वह देखना।"

लिंकन ने आर्मस्ट्रोंग का कुस्ती का चेलेंज स्वीकार कर लिया। पूरा गाँव कुस्ती देखने के लिए इकट्ठा हो गया।

कुस्ती की जंग शुरू हुई। दोनों ने आमने-सामने मुक्के मारे। हाथ मरोड़ने का प्रयास किया।

आखिरकार आर्मस्ट्रोंग लिंकन की ताकत पहचान गया। लिंकन को हराना बुहत मुश्किल था। आर्मस्ट्रोंग ने लिंकन के सामने हाथ बढ़ाया और लिंकन ने क्षण की भी देर किए बिना, आर्मस्ट्रोंग से हाथ मिला लिया। समय जाते दोनों जिगरजान दोस्त बन गए।

लिंकन के कहने से आर्मस्ट्रोंग और उसकी बिगड़ेल टोली ने लोगों को परेशान करना बंद कर दिया और सही रास्ते पर चलने लगे। उन दिनों आर्मस्ट्रोंग ने लिंकन की बहुत मदद की। सालों के बाद, जेक आर्मस्ट्रोंग का पुत्र बड़ी मुश्किल मे फँस गया। उस समय लिंकन बड़े वकील थे। अपने जिगरजान दोस्त के पुत्र को लिंकन ने अपनी वकालत द्वारा उस मुश्किल से बाहर निकाला और अपनी दोस्ती निभाई।

वैसे तो उस जंग के परिणाम स्वरूप दोनों में ज़िंदगीभर का भेद पड़ सकता था, उसके बजाय आर्मस्ट्रोंग और लिंकन के बीच ज़िंदगीभर की मित्रता हो गई। एक-दूसरे को हराने के लिए जंग करने वाले दोनों प्रतियोगियों ने एक-दूसरे के प्रति ज़रा सा भी अभाव रखे बिना, सच्चे दिल से मित्रता अपनाई और उस मित्रता को जीवनभर अटूटता से निभाया।

मीठी यादें

एक बार एक ब्रह्मचारी बहन दूसरी बहन के साथ नाश्ता करने के लिए बैठीं। दोनों बहनों ने चाय-नाश्ता साथ में किया।

इतने में नीरू माँ भी बहनों के साथ नाश्ता करने के लिए आए। नीरू माँ ने उस ब्रह्मचारी बहन से पूछा, "तुझे चाय पीने की आदत है?"

बहन ने जवाब दिया, "नहीं, नीरू माँ आदत तो नहीं है।"

नीरू माँ ने पूछा, "तो फिर क्यों ली?"

बहन ने कहा, "नाश्ता के साथ कुछ लिक्विड चाहिए इसलिए ली।"

नीरू माँ ने पूछा, "तो घर पर लिक्विड में क्या लेती थीं।"

"दूध"

तो फिर यहाँ दूध क्यों नहीं लिया? क्या यह तुम्हारी माँ का घर नहीं है? तुम जुदाई क्यों रखती हो?" ऐसा कहकर नीरू माँ नाश्ता अधूरा छोड़कर खड़े हो गए। और रसोई में जाकर उस बहन के लिए दूध बनाया।

बादाम, पिस्ता और केसर डालकर गरमा-गरम दूध का ग्लास उस बहन को देकर प्रेम से कहा, "तुम्हें हक से दूध लेना है। जैसे तुम अपने घर पर दूध लेने में कोई संकोच नहीं करती, वैसे ही तुम्हें यहाँ भी रखना है।"

और फिर स्ट्रोंग होकर कहा, "यह तुम्हारी माँ का ही घर है। तुम्हें कोई जुदाई नहीं रखनी है। यदि तुम ऐसी जुदाई रखोगी तो भेद पड़ जाएगा। ज्ञानी के साथ भेद होता होगा? तुम्हें तो ऐसा ही रखना है कि मैं और नीरू माँ एक हैं।"

इस तरह नीरू माँ ने उस बहन में अभेदता की दृष्टि सेट कर दी। और अपनी प्रेम प्रसादी देते हुए कहा, "अब, तुम रोज़ इसी ग्लास में दूध पीना।"

नीरू माँ का अद्भुत प्रेम चखकर वह बहन तो गद्‌गद् हो गई। दूसरे दिन नीरू माँ ने उस बहन से बादाम-पिस्ता का पाउडर पीसकर रोज़ दूध में एक चम्मच डालकर पीने के लिए कहा। उस बहन का संकोच देखकर नीरू माँ ने कहा, "तुम्हारी हेल्थ के लिए भी अच्छा रहेगा। तुम्हारे अंदर थोड़ी विटामिन्स की कमी है न, वह भी ठीक हो जाएगी।"

नीरू माँ को उसकी विटामिन की कमी का भी पता था, यह जानकर उस बहन का हृदय भर आया।

नीरू माँ का बहता हुआ प्रेम उस बहन को ऐसा स्पर्श कर गया कि वे पूरी ज़िंदगी के लिए नीरू माँ के प्रेम के धागे से बंध गई। दुनिया में सब भूल जाएँगे, लेकिन नीरू माँ का प्रेम कभी नहीं भूल पाएँगे।

Akram Express

February 2018
Year : 5, Issue : 11
Conti. Issue No.: 59

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में...

एक बार भगवान बुद्ध एक सभा को संबोधित करने गए। उनके हाथ में एक रुमाल था। आसन पर बैठकर, बुद्ध अपने हाथ के रुमाल में गाँठ बाँधने लगे। सभी श्रोता आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे। रुमाल में चार-पाँच गाँठ बाँधने के बाद, सभाजनों को रुमाल दिखाते हुए पूछा, "यह वही रुमाल है जो मैं लाया था उसमें कुछ फर्क है?"

एक श्रोता ने कहा, "भगवंत, रुमाल तो वही है, लेकिन उसका स्वरूप बदल गया है।"

बुद्ध ने कहा, "आपकी बात ठीक है। लेकिन यदि मैं चाहूँ तो क्या इसका रूप पहले जैसा हो सकता है?"

किसी ने जवाब दिया, "प्रभु, यह संभव है। बस, रुमाल में बंधी हुई गाँठें ही खोल देनी पड़ेगी।"

बुद्ध ने पूछा, "गाँठें खोलने का उपाय क्या है? क्या खींचने से गाँठ खुल जाएँगी?"

एक श्रोता ने कहा, "भगवान, यदि गाँठों का निरिक्षण करके यह समझ लें कि गाँठ किस तरह पड़ी है तो खोलने में सरलता हो जाएगी। यदि यह पता नहीं होगा तो खींचने से गाँठ और मज़बूत हो जाए यह भी संभव है।"

भगवान बुद्ध ने सभाजनों से कहा, "बस, संबंधों में पड़ी हुई गाँठों को भी इसी तरह खोलना है।"

मित्रों, कई बार संबंधों में इस तरह गाँठें पड़ जाती हैं। यदि हम खुद का ही सही मानकर खींचेंगे, तो गाँठ ज्यादा मज़बूत हो जाएगी। सामने वाले व्यक्ति के साथ भेद पड़ जाएगा। यदि हम गाँठ लगने के कारण को ढूँढेंगे और सामने वाले व्यक्ति से कोई अपेक्षा रखे बगैर अपनी ओर से उस कारण को खत्म करने का प्रयत्न करेंगे तो सरलता से सभी गाँठें सुलझ जाएँगी। और संबंध उस रुमाल की तरह पहले जैसे हो जाएँगे।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025 and published